om 3 delhi final_Page 1 and 2 25/04/2015 18:28 Page 9

कथा सरिता

पसीने की रोटी

ठठ्ठा शहर का बादशाह अपनी बेगम और इकलौती शहज़ादी के साथ सुख-शांतिपूर्वक अपनी प्रजा का पालन करता था। एक दिन अचानक वज़ीर ने बगावत कर दी और राज सिंहासन पर आसीन हो गया। उसने बादशाह को देश निकाला दे दिया। बादशाह अपनी बेगम और बेटी को लेकर जंगल-जंगल भटकने लगा। बेटी जब बड़ी हुई तब माँ-बाप को उसकी शादी की चिंता सताने लगी।

संयोग से एक दिन सघन जंगल में एक युवा लकड़हारा आया। वह हृष्ट-पुष्ट, सुंदर और मेहनती था। उसको देखकर बादशाह ने सोचा-यह युवक मेरी बेटी के लिए उपयुक्त वर होगा। उसने अपनी बेगम से परामर्श किया कि शहज़ादी को कुछ समय के लिए उसके साथ रहने की अनुमति देनी चाहिए, जिससे बेटी अपने होने वाले जीवन साथी के स्वभाव से परिचित हो सके और उसने ऐसा ही किया। एक दिन शाम को राजकुमारी उस लकड़हारे के साथ उसके घर गई जहाँ उसने देखा कि एक अत्यंत साधारण सा लेकिन साफ-सुथरा घर था। घर में एक घड़ा, पीतल का कटोरा और एक माटी की ही हांडी थी। यही उस घर की शोभा-सामग्री थी। लकड़हारे ने तुरंत खाना पकाया और दोनों ने एक साथ भोजन किया। शहज़ादी ने कहा कि आप आराम कीजिए, मैं अभी बर्तन साफ कर देती हूँ। शहज़ादी ने एक रोटी सुबह के लिए भी बचाकर रख ली। लकड़हारे ने रोटी बचाते हुए देख लिया। उसने यह देखकर कहा कि सुबह के लिए एक रोटी बचाना ठीक नहीं है। कल दोबारा मेहनत करेंगे और तब ताजा भोजन पकाया जाएगा। ताजा भोजन का स्वाद ही कुछ और होता है। बचे हुए को अभी मिलकर खा लीजिए। दोनों ने उस रोटी को भी मिल-बांट कर खा लिया। शहज़ादी अपने माँ-बाप के पास लौटकर आई और सारी बात अपने माता-पिता को बता दी। बादशाह को लकड़हारे का परिश्रमी स्वभाव बहुत अच्छा लगा। उसने सोचा-जिस आदमी को अपनी मेहनत पर इतना भरोसा है, वह जीवन में कभी दु:खी नहीं रह सकता। उसने अपनी बेटी की शादी लकड़हारे से कर दी। दोनों मिलकर परिश्रमपूर्वक सुख-शांतिपूर्वक जीवनयापन करने लगे।

गुरु की जूतियां

अमीर खुसरो निज़ामुद्दीन औलिया के पक्के भक्त थे। इससे पहले खुसरो मुलतान के हाकिम के यहाँ नौकरी करते थे। किसी वजह से उन्होंने नौकरी छोड़ दी और वे अपना सारा सामान ऊंटों पर लादकर गुरु से मिलने दिल्ली की ओर निकल पड़े।

एक दिन हज़रत निज़ामुद्दीन के पास एक गरीब आदमी आया और बोला, 'मालिक मेरी लड़की की शादी तय हो गई है। आप कुछ मदद कर सकें, तो मैं आपका शुक्रगुज़ार होऊंगा।' हज़रत बोले, 'आज तो मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं है, तुम कल आना।' वह आदमी जब दूसरे दिन गया, तो हज़रत बोले, 'आज भी मेरे पास कुछ नहीं है। कल आकर देखना, शायद कुछ मिल जाए।' इस तरह तीन दिन बीत गए, लेकिन हज़रत के पास भेंट चढ़ाने के लिए कोई नहीं आया। आखिर चौथे दिन जब वह गरीब वापस जाने लगा, तो उन्होंने गरीब आदमी को अपनी जूतियों की जोड़ी ही दे दी। गरीब बेचारा जूतियों को देखकर निराश हो गया। हज़रत की दी हुई चीज़ को नकार भी तो नहीं सकता था, इसलिए वह जूतियां काँख में दबाकर चल पड़ा। इतने में उसे सामने से अमीर खुसरो आते दिखाई दिए।

अमीर खुसरो रोज़ अपने हाथ से गुरु की जूतियों पर इत्र मलते थे। जूतियों से उसी इत्र की खुशबू आ रही थी। अमीर खुसरो बोल पड़े-'कहीं से पीर की खुशबू आ रही है, किंतु पीर कहीं दिखाई नहीं दे रहे हैं।' जब वह गरीब आदमी खुसरो के सामने से गुज़रा, तो वे समझ गए कि खुशबू इसी आदमी के पास से आ रही है। उन्होंने रोककर पूछा, 'आप कहाँ से आ रहे हैं?' गरीब आदमी ने उनको सारी बात बता दी। तब खुसरो बोले-'क्या तुम इन जूतियों को बेचोगे?' उस आदमी ने कहा-'आप इन्हें बिना दाम के वैसे भी ले सकते हैं, क्योंकि मेरे लिए इनका कोई उपयोग नहीं है।' खुसरो ने कहा-'ये तो मेरे लिए बेशकीमती हैं।' उन्होंने पत्नी, दो बच्चों और खुद के लिए एक-एक ऊंट रखकर बाकी सारे ऊंट और उन पर लदा सारा कीमती सामान देकर उस गरीब आदमी से गुरु की चरण पादुकाएं ले लीं। वह गरीब आदमी खुसरो को दुआ देता हुआ चला गया।

खुसरो जब दिल्ली पहुँचे, तो उन्होंने हज़रत के चरणों पर वे जूतियां रख दीं। तब हज़रत ने पूछा, इनके बदले क्या दिया तुमने? खुसरो ने सारी चीज़ें गिना दीं और पीर से बोले,'मुझे कितने सस्ते में ये मिली हैं।' खुसरो का अपने प्रति यह उत्कट प्रेम देख हज़रत निज़ामुद्दीन के मुँह से शब्द निकले, 'यह मेरा प्रिय शिष्य है, इसकी कब्र मेरी कब्र के पास ही बनाना।' आज भी अमीर खुसरो की मज़ार अपने गुरु की मज़ार के पास देखी जा सकती है।

गुरु दक्षिणा

जंगल में एक छोटा-सा आश्रम था। आश्रम में एक ऋषि रहते थे। उनके पास बड़े-बड़े धनी लोगों के बच्चे पढ़ने आते थे। पढ़ाई पूरी करने के बाद गुरु-दक्षिणा की बारी आती थी। ऋषि संकोचवश कुछ न कहते। पर शिष्यों के पिता अपनी ओर से बहुत कुछ दे जाते। कोई ऋषि को सोना अर्पित करता, तो कोई पालतू पशु दे जाता। कोई आश्रम के लिए आजीवन अन्न भेजने का संकल्प ले लेता।

देखते-देखते आश्रम एक बड़े से गुरुकुल में बदल गया। अब ऋषि भी बदल गए थे। वे मुँह खोलकर गुरु-दक्षिणा मांग लेते। पढ़ने आने वाले का चुनाव भी वह हैसियत देखकर करने लगे।

ऋषि का नियम था कि वह प्रात: काल नदी पर नहाने जाते थे। ऐसे ही एक दिन वह नदी पर नहाने गये। देखा, तट पर एक बालक बैठा उनका इंतज़ार कर रहा था। उन्हें देखते ही बालक उनके चरणों में लिपट गया। बोला-''मैं अनाथ हूँ। मेरे पिता की इच्छा थी कि मैं आपसे शिक्षा ग्रहण करूं। मुझे अपना शिष्य बना लें।'' ऋषि ने बालक को ध्यान से देखा। फिर मन-ही-मन सोचा-'यह निर्धन बालक भला मुझे क्या गुरु-दक्षिणा देगा।' उन्होंने बालक को शिष्य बनाने से इन्कार कर दिया। स्नान करके जब ऋषि आश्रम की ओर चले, तो बालक भी पीछे-पीछे चल दिया। उन्होंने बालक को समझाया। पर वह ज़िद पर अड़ा रहा। ऐसे ही चलते-चलते दोनों आश्रम पहुँच गए। बालक ने फिर ऋषि के पैर पकड़ लिए और शिष्य बनाने की प्रार्थना की। बालक से पीछा छुड़ाने के लिए ऋषि ने मुँह खोलकर मांग लिया-'गुरु-दक्षिणा में मैं एक हज़ार गायें लूंगा। यदि दे सको, तो मेरे आश्रम में आ सकते हो।' कहकर ऋषि आश्रम के अंदर चले गए। बालक चुप हो गया। फिर भरे मन से उठकर आश्रम के बाहर एक पेड़ के नीचे बैठ गया। उसकी आँखों में आँसू छलछला आए। थोड़ी देर बाद ऋषि को गायों के रंभाने की आवाज़ें सुनाई दीं। उनके आश्रम की गायों को तो कुछ शिष्य चराने के लिए जंगल के अंदर लेकर गये थे। फिर ये आवाज़ें किसकी हैं?

ऋषि ने चकित होकर अपने एक शिष्य को बाहर पता लगाने भेजा। थोड़ी देर बाद ही शिष्य चिल्लाते हुए आया-'गुरुजी-गुरुजी, हमारे आश्रम को गायों ने घेर लिया है।'

चकित ऋषि आश्रम से बाहर आये। चारो ओर गायें ही गायें दिख रही थी। सबकी सब आश्रम के अंदर घुसने को आतुर। ऋषि किसी तरह रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े तो देखा, उनका शिष्य बनने की चाह रखने वाला बालक पेड़ के नीचे बैठकर रो रहा था। वह हाथ जोड़कर बस एक ही प्रार्थना करता जा रहा था-'हे माँ सरस्वती, मुझे एक हज़ार गायें दे दो, ताकि मैं अपने गुरु को दक्षिणा देकर ज्ञान प्राप्त कर सकूं।' बालक लगातार रो रहा था। उसके आंसुओं की जितनी बूंदें गिरती, उतनी ही गायें प्रकट हो जातीं। गायों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी। यह सारा दृश्य देख-सुनकर ऋषि की गर्दन शर्म से झुक गई। वह बालक के पास बैठ गए और बोले-'मैं तुम्हारा गुरु नहीं बन सकता। वास्तव में तुम मेरे गुरु हो। तुमने मुझे सच्चा ज्ञान दिया है। आज से मेरे आश्रम में गुरु-दक्षिणा नहीं ली जाएगी।' कहकर ऋषि ने बालक को गले से लगा लिया। देखते-देखते सारी गायें अदृश्य हो गयीं। ऋषि स्नेह से अपने नए शिष्य को आश्रम के अंदर ले गये।

फरीदाबाद। ज्ञानचर्चा के पश्चात् एन.आई.टी. क्षेत्र विधानसभा के विधायक नगेन्द्र बढ़ाना को आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु. कौशल्या।

देवबंद-गुज्जरवाड़ा(उ.प्र.)। जेल अधीक्षक अजय कुमार का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. सुधा।

देहरा-हि.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में डी.एस.पी. रेनू शर्मा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. कमलेश।

सौंख-उ.प्र.। महाशिवरात्रि पर शिव ध्वजारोहण के पश्चात् समूह चित्र में पुलिस इन्सपेक्टर सत्यवीर जी, नगर चेयरमैन शिव शंकर वर्मा, ब्र.कु. दुर्गेशलता, ब्र.कु.बृजमोहन, ब.स.पा.नेता गोकुलेश, हरिओम जी व अन्य।

आगरा-शाखीपुरम। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए डॉ. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. सरिता, जिला जज रुपेश जी तथा अन्य।

जोधपुर-तिंवरी। शिवजयंती के पावन अवसर पर बारह ज्योतिर्लिंग की झाँकी व रैली निकालते हुए ब्र.कु. मन्जू व ब्र.कु. बीनू।